~~Database~~

Any collection of ~~relation~~ information

~~Data~~

Part- III (लघु सिद्धान्त कौमुदी)

① सदृश = हरेः सादृश्यम्

② पूर्वतः = पूर्वं वर्तते

③ पंचगवम् = पंचानां गवां समाहारः

④ पञ्चगंगम् = पञ्चानाम् गङ्गानाम्

⑤ नीलोत्पलम् = नीलम् उत्पलम्

⑥ कुम्भकारः = कुम्भं करोति

⑦ घनश्यामः = घन इव श्यामः

⑧ कठकालः = कठै कालो यस्य

⑨ अहोरात्रः = अहश्च रात्रिश्च

⑩ उपराजम् = राज्ञः समीपम्

⑪ अब्राह्मण = न ब्राह्मण

⑫ अधिहरि = हरि वि० अधि

⑬ अधिगोपम् = गोपा वि० अधि

③ पितरौ

यहाँ माता च पिता च (मातृ च पितृ च) इस विग्रह में चार्थे द्वन्द्वः से परस्पर द्वन्द्व समास होने पर सुप् का लोप हो मातृ पितृ रूप बनता है। इस स्थिति में माता पिता के विकल्पतः मातृ का लोप होकर पितृ रूप बनने पर प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय के 'पितृ औ' रूप बनता है, तब ऋतो ङिऽ से तकारोत्तरवर्ती ऋकार के स्थान पर गुण 'अर्' होकर पितृ अर् औ' = पितरौ रूप सिद्ध होता है। पक्ष में मातापितरौ रूप भी बनता है।

लघु सिद्धान्त कौमुदी

Part - III Honours, Sanskrit

हरिहरौ

(1) यहाँ 'हरिश्च हरश्च' (हरि सु हर सु) इस विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्वः' से परस्पर द्वन्द्व समास होने पर 'द्वन्द्वे घि' से घि संज्ञक [illegible] का पूर्व प्रयोग होकर हरि सु हर सु रूप [illegible] इस स्थिति में सुप लोप होकर 'हरि हर' रूप [illegible] है फिर अजन्त पुंलिंग से हरौ होकर हरिहरौ रूप सिद्ध होता है।

(2) शिवकेशवौ शिवकेशवौ

यहाँ 'शिवश्च केशवश्च' (शिव सु के[illegible]) इस विग्रह में 'चार्थे द्वन्द्वः' से परस्पर द्वन्द्व समास हो 'अल्पाच्तरं' (१९८) से शिवः [illegible] का पूर्व प्रयोग होकर शिव सु केशव सु [illegible] बनता है। इस स्थिति में प्रथमपद [illegible] सुप लोप होकर 'शिवकेशव' शिव केशव [illegible] बनने पर अजन्त पुंलिंग से केशवौ होकर शिवकेशवौ रूप बना।